

प्रत्यय

प्रत्यय- जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-जलज, पंकज आदि। जल=पानी तथा ज=जन्म लेने वाला। पानी में जन्म लेने वाला अर्थात् कमल। इसी प्रकार पंक शब्द में ज प्रत्यय लगकर पंकज अर्थात् कमल कर देता है। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत प्रत्यय।
2. तद्धित प्रत्यय।

1. कृत प्रत्यय

जो प्रत्यय धातुअं के अंत में लगते हैं वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय के योग से बने शब्दों को (कृत+अंत) कृदंत कहते हैं। जैसे-राखन+हारा=राखनहारा, घट+इया=घटिया, लिख+आवट=लिखावट आदि। (क) कर्तृवाचक कृदंत- जिस प्रत्यय से बने शब्द से कार्य करने वाले अर्थात् कर्ता का बोध हो, वह कर्तृवाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-'पढ़ना'। इस सामान्य क्रिया के साथ वाला प्रत्यय लगाने से 'पढ़नेवाला' शब्द बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
वाला	पढ़नेवाला, लिखनेवाला, रखवाला	हारा	राखनहारा, खेवनहारा, पालनहारा
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, चलाऊ	आक	तैराक
आका	लड़ाका, धड़ाका, धमाका	आड़ी	अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी
आलू	आलू, झगड़ालू, दयालू, कृपालू	ऊ	उड़ाऊ, कमाऊ, खाऊ
एरा	लुटेरा, सपेरा	इया	बढ़िया, घटिया
ऐया	गवैया, रखैया, लुटैया	अक	धावक, सहायक, पालक

(ख) कर्मवाचक कृदंत- जिस प्रत्यय से बने शब्द से किसी कर्म का बोध हो वह कर्मवाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-गा में ना प्रत्यय लगाने से गाना, सूँघ में ना प्रत्यय लगाने से सूँघना और बिछ में औना प्रत्यय लगाने से बिछौना बना है।

(ग) करणवाचक कृदंत- जिस प्रत्यय से बने शब्द से क्रिया के साधन अर्थात् करण का बोध हो वह करणवाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-रेत में ई प्रत्यय लगाने से रेती बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आ	भटका, भूला, झूला	ई	रेती, फाँसी, भारी
ऊ	झाड़ू	न	बेलन, झाड़न, बंधन
नी	धौंकनी करतनी, सुमिरनी		

(घ) भाववाचक कृदंत- जिस प्रत्यय से बने शब्द से भाव अर्थात् क्रिया के व्यापार का बोध हो वह भाववाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-सजा में आवट प्रत्यय लगाने से सजावट बना।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
अन	चलन, मनन, मिलन	औंती	मनौंती, फिरौंती, चुनौंती
आवा	भुलावा, छलावा, दिखावा	अंत	भिड़ंत, गढ़ंत
आई	कमाई, चढ़ाई, लड़ाई	आवट	सजावट, बनावट, रुकावट
आहट	घबराहट, चिल्लाहट		

(ङ) क्रियावाचक कृदंत- जिस प्रत्यय से बने शब्द से क्रिया के होने का भाव प्रकट हो वह क्रियावाचक कृदंत कहलाता है। जैसे-भागता हुआ, लिखता हुआ आदि। इसमें मूल धातु के साथ ता लगाकर बाद में हुआ लगा देने से वर्तमानकालिक क्रियावाचक कृदंत बन जाता है। क्रियावाचक कृदंत केवल पुल्लिंग और एकवचन में प्रयुक्त होता है।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
ता	डूबता, बहता, रमता, चलता	ता	हुआ आता हुआ, पढ़ता हुआ
या	खोया, बोया	आ	सूखा, भूला, बैठा
कर	जाकर, देखकर	ना	दौड़ना, सोना

2. तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। इनके योग से बने शब्दों को 'तद्धितांत' अथवा तद्धित शब्द कहते हैं। जैसे-अपना+पन=अपनापन, दानव+ता=दानवता आदि।

(क) कर्तृवाचक तद्धित - जिससे किसी कार्य के करने वाले का बोध हो। जैसे- सुनार, कहार आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
क	पाठक, लेखक, लिपिक	आर	सुनार, लुहार, कहार
कार	पत्रकार, कलाकार, चित्रकार	इया	सुविधा, दुखिया, आढ़तिया
एरा	सपेरा, ठठेरा, चितेरा	आ	मछुआ, गेरुआ, ठलुआ
वाला	टोपीवाला घरवाला, गाड़ीवाला	दार	ईमानदार, दुकानदार, कर्जदार

हारा	लकड़हारा, पनिहारा, मनिहार	ची	मशालची, खजानची, मोची
गर	कारीगर, बाजीगर, जादूगर		

(ख) भाववाचक तद्धित - जिससे भाव व्यक्त हो। जैसे-सर्पाफा, बुढ़ापा, संगत, प्रभुता आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
पन	बचपन, लड़कपन, बालपन	आ	बुलावा, सर्पाफा
आई	भलाई, बुराई, ढिठाई	आहट	चिकनाहट, कड़वाहट, घबराहट
इमा	लालिमा, महिमा, अरुणिमा	पा	बुढ़ापा, मोटापा
ई	गरमी, सरदी, गरीबी	औती	बपीती

(ग) संबंधवाचक तद्धित - जिससे संबंध का बोध हो। जैसे-ससुराल, भतीजा, चचेरा आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आल	ससुराल, ननिहाल	एरा	ममेरा, चचेरा, फुफेरा
जा	भानजा, भतीजा	इक	नैतिक, धार्मिक, आर्थिक

(घ) ऊनता (लघुता) वाचक तद्धित - जिससे लघुता का बोध हो। जैसे-लुटिया।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
इया	लुटिया, डिबिया, खटिया	ई	कोठरी, टोकनी, ढोलकी
टी, टा	लँगोटी, कछौटी, कलूटा	ड़ी, ड़ा	पगड़ी, टुकड़ी, बछड़ा

(ङ) गणनावाचक तद्धित - जिससे संख्या का बोध हो। जैसे-इकहरा, पहला, पाँचवाँ आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
हरा	इकहरा, दुहरा, तिहरा	ला	पहला
रा	दूसरा, तीसरा	था	चौथा

(च) सादृश्यवाचक तद्धित - जिससे समता का बोध हो। जैसे-सुनहरा।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
सा	पीला-सा, नीला-सा, काला-सा	हरा	सुनहरा, रुपहरा

(छ) गुणवाचक तद्धति - जिससे किसी गुण का बोध हो। जैसे-भूख, विषैला, कुलवंत आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
आ	भूखा, प्यासा, ठंडा, मीठा	ई	धनी, लोभी, क्रोधी
ईय	वांछनीय, अनुकरणीय	ईला	रंगीला, सजीला
ऐला	विषैला, कसैला	लु	कृपालु, दयालु
वंत	दयावंत, कुलवंत	वान	गुणवान, रूपवान

(ज) स्थानवाचक तद्धति - जिससे स्थान का बोध हो। जैसे-पंजाबी, जबलपुरिया, दिल्लीवाला आदि।

प्रत्यय	शब्द-रूप	प्रत्यय	शब्द-रूप
ई	पंजाबी, बंगाली, गुजराती	इया	कलकतिया, जबलपुरिया
वाल	वाला डेरेवाला, दिल्लीवाला		

कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में अंतर

कृत प्रत्यय- जो प्रत्यय धातु या क्रिया के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं कृत प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे- लिखना, लिखाई, लिखावट।

तद्धित प्रत्यय- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-नीति-नैतिक, काला-कालिमा, राष्ट्र-राष्ट्रीयता आदि।

संधि

संधि-संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। जैसे-सम्+तोष=संतोष। देव+इंद्र=देवेंद्र। भानु+उदय=भानूदय।

संधि के भेद-संधि तीन प्रकार की होती हैं-

1. स्वर संधि।
2. व्यंजन संधि।
3. विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। जैसे-विद्या+आलय=विद्यालय। स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

(क) दीर्घ संधि

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, और ऊ हो जाते हैं। जैसे-

(क) अ+अ=आ धर्म+अर्थ=धर्मार्थ, अ+आ=आ-हिम+आलय=हिमालय।

आ+अ=आ आ विद्या+अर्थी=विद्यार्थी आ+आ=आ-विद्या+आलय=विद्यालय।

(ख) इ और ई की संधि-

इ+इ=ई- रवि+इंद्र=रवींद्र, मुनि+इंद्र=मुनींद्र।

इ+ई=ई- गिरि+ईश=गिरीश मुनि+ईश=मुनीश।

ई+इ=ई- मही+इंद्र=महींद्र नारी+इंदु=नारींदु

ई+ई=ई- नदी+ईश=नदीश मही+ईश=महीश

(ग) उ और ऊ की संधि-

उ+उ=ऊ- भानु+उदय=भानूदय विधु+उदय=विधूदय

उ+ऊ=ऊ- लघु+ऊर्मि=लघूर्मि सिधु+ऊर्मि=सिधूर्मि

ऊ+उ=ऊ- वधू+उत्सव=वधूत्सव वधू+उल्लेख=वधूल्लेख

ऊ+ऊ=ऊ- भू+ऊर्ध्व=भूधर्व वधू+ऊर्जा=वधूर्जा

(ख) गुण संधि

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए, उ, ऊ हो तो ओ, तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं जैसे-

(क) अ+इ=ए- नर+इंद्र=नरेंद्र अ+ई=ए- नर+ईश=नरेश

आ+इ=ए- महा+इंद्र=महेंद्र आ+ई=ए महा+ईश=महेश

(ख) अ+ई=ओ ज्ञान+उपदेश=ज्ञानोपदेश आ+उ=ओ महा+उत्सव=महोत्सव

अ+ऊ=ओ जल+ऊर्मि=जलोर्मि आ+ऊ=ओ महा+ऊर्मि=महोर्मि

(ग) अ+ऋ=अर् देव+ऋषि=देवर्षि

(घ) आ+ऋ=अर् महा+ऋषि=महर्षि

(ग) वृद्धि संधि

अ आ का ए ऐ से मेल होने पर ऐ अ आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे-

(क) अ+ए=ऐ एक+एक=एकैक अ+ऐ=ऐ मत+ऐक्य=मतैक्य

आ+ए=ऐ सदा+एव=सदैव आ+ऐ=ऐ महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य

(ख) अ+ओ=औ वन+ओषधि=वनौषधि आ+ओ=औ महा+ओषध=महौषधि

अ+औ=औ परम+औषध=परमौषध आ+औ=औ महा+औषध=महौषध

(घ) यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है। (ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है। (ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ+अ=य्+अ यदि+अपि=यद्यपि ई+आ=य्+आ इति+आदि=इत्यादि

ई+अ=य्+अ नदी+अर्पण=नद्यर्पण ई+आ=य्+आ देवी+आगमन=देव्यागमन

(घ) उ+अ=व्+अ अनु+अय=अन्वय उ+आ=व्+आ सु+आगत=स्वागत

उ+ए=व्+ए अनु+एषण=अन्वेषण ऋ+अ=र्+आ पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा

(ङ) अयादि संधि- ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए+अ=अय्+अ ने+अन+नयन (ख) ऐ+अ=आय्+अ गौ+अक=गायक

(ग) ओ+अ=अव्+अ पो+अन=पवन (घ) औ+अ=आव्+अ पौ+अक=पावक

औ+इ=आव्+इ नौ+इक=नाविक

2. व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
जैसे-शरत्+चंद्र=शरच्चंद्र

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे-

क्+ग=ग्ग दिक्+गज=दिग्गज। क्+ई=गी वाक्+ईश=वागीश

च्+अ=ज् अच्+अंत=अजंत ट्+आ=डा षट्+आनन=षडानन

प+ज+ब्ज अप्+ज=अब्ज

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे-

क्+म=ङ् वाक्+मय=वाङ्मय च्+न=ज् अच्+नाश=अञ्नाश

ट्+म=ण् षट्+मास=षण्मास त्+न=न् उत्+नयन=उन्नयन

प्+म्=म् अप्+मय=अम्मय

(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे-

त्+भ=द्भ सत्+भावना=सद्भावन त्+ई=दी जगत्+ईश=जगदीश

त्+भ=द्भ भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति त्+र=द्र तत्+रूप=तद्रूप

त्+ध=द्ध सत्+धर्म=सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च्, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल् होने पर ल् हो जाता है। जैसे-

त्+च=च्च उत्+चारण=उच्चारण त्+ज=ज्ज सत्+जन=सज्ज

त्+झ=ज्झ उत्+झटिका=उज्झटिका त्+ट=ट्ट तत्+टीका=तट्टीका

त्+ड=ड्ड उत्+डयन=उड्डयन त्+ल=ल्ल उत्+लास=उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे-

त्+श्=च्छ उत्+श्वास=उच्छ्वास त्+श=च्छ उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट

त्+श=च्छ सत्+शारु=सच्छारु

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे-

त्+ह=द्ध उत्+हार=उद्धार त्+ह=द्ध उत्+हरण=उद्धरण

त्+ह=द्ध तत्+हित=तद्धित

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे-

अ+छ्=अच्छ् स्व+छंद=स्वच्छंद आ+छ्=आच्छ् आ+छ्वादन=आच्छ्वादन

इ+छ्=इच्छ् संधि+छेद=संधिच्छेद उ+छ्=उच्छ् अनु+छेद=अनुच्छेद

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे-

म्+च्=ं किम्+चित=किंचित् म्+क=ं किम्+कर=किंकर

म्+क=ं सम्+कल्प=संकल्प म्+च=ं सम्+चय=संचय

म्+त=० सम्+तोष=संतोष म्+ब=० सम्+बंध=संबंध

म्+प=० सम्+पूर्ण=संपूर्ण

(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे-

म्+म=म्म सम्+मति=सम्मति म्+म=म्म सम्+मान=सम्मान

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे-

म्+य=० सम्+योग=संयोग म्+र=० सम्+रक्षण=संरक्षण

म्+व=० सम्+विधान=संविधान म्+व=० सम्+वाद=संवाद

म्+श=० सम्+शय=संशय म्+ल=० सम्+लग्न=संलग्न

म्+स=० सम्+सार=संसार

(ट) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे-

र्+न=ण परि+नाम=परिणाम र्+म=ण ङ+मान=प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे-

भ्+स्=ष अभि+सेक=अभिषेक नि+सिद्ध=निषिद्ध वि+सम+विषम

3. विसर्ग-संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे-

मनः+अनुकूल=मनोनुकूल।

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे-

मनः+अनुकूल=मनोनुकूल अधः+गति=अधोगति मनः+बल=मनोबल

(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे-

निः+आहार=निराहार निः+आशा=निराशा निः+धन=निर्धन

(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे-

निः+चल=निश्चल निः+छल=निश्छल दुः+शासन=दुःशासन

(घ) विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे-

तमः+ते=तमस्ते निः+संतान=निस्संतान दुः+साहस=दुस्साहस

(ड) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है।
जैसे-

निः+कलंक=निष्कलंक चतुः+पाद=चतुष्पाद निः+फल=निष्फल

(ड) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे-
निः+रोग=निरोग निः+रस=नीरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-
अंतः+करण=अंतःकरण

शब्द-ज्ञान

1. पर्यायवाची शब्द

किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्द समानार्थी होते हैं किन्तु भाव में एक-दूसरे से किंचित भिन्न होते हैं।

1. अमृत- सुधा, सोम, पीयूष, अमिय।
2. असुर- राक्षस, दैत्य, दानव, निशाचर।
3. अग्नि- आग, अनल, पावक, वह्नि।
4. अश्व - घोड़ा, हय, तुरंग, बाजी।
5. आकाश- गगन, नभ, आसमान, व्योम, अंबर।
6. आँख- नेत्र, दृग, नयन, लोचना।
7. इच्छा- आकांक्षा, चाह, अभिलाषा, कामना।
8. इंद्र- सुरेश, देवेन्द्र, देवराज, पुरंदर।
9. ईश्वर - प्रभु, परमेश्वर, भगवान, परमात्मा।
10. कमल- जलज, पंकज, सरोज, राजीव, अरविन्द।
11. गरमी- ग्रीष्म, ताप, निदाघ, ऊष्मा।
12. गृह- घर, निकेतन, भवन, आलया।
13. गंगा- सुरसरि, त्रिपथगा, देवनदी, जाह्नवी, भागीरथी।
14. चंद्र- चाँद, चंद्रमा, विधु, शशि, राकेश।
15. जल- वारि, पानी, नीर, सलिल, तोया।
16. नदी- सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी।
17. पवन- वायु, समीर, हवा, अनिल।
18. पत्नी- भार्या, दारा, अर्धांगिनी, वामा।
19. पुत्र- बेटा, सुत, तनय, आत्मजा।
20. पुत्री-बेटी, सुता, तनया, आत्मजा।
21. पृथ्वी- धरा, मही, धरती, वसुधा, भूमि, वसुंधरा।
22. पर्वत- शैल, नग, भूधर, पहाड़।
23. बिजली- चपला, चंचला, दामिनी, सौदामनी।
24. मेघ- बादल, जलधर, पयोद, पयोधर, घन।
25. राजा- नृप, नृपति, भूपति, नरपति।
26. रजनी- रात्रि, निशा, यामिनी, विभावरी।

- 27.सर्प- सांप, अहि, भुजंग, विषधरा।
- 28.सागर- समुद्र, उदधि, जलधि, वारिधि।
- 29.सिंह- शेर, वनराज, शार्दूल, मृगराज।
- 30.सूर्य- रवि, दिनकर, सूरज, भास्कर।
- 31.स्त्री- ललना, नारी, कामिनी, रमणी, महिला।
- 32.शिक्षक- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।
- 33.हाथी- कुंजर, गज, द्विप, करी, हस्ती।

2. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1	जिसे देखकर डर (भय) लगे	डरावना, भयानक
2	जो स्थिर रहे	स्थावर
3	ज्ञान देने वाली	ज्ञानदा
4	भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाले	त्रिकालदर्शी
5	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
6	जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
7	पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक
8	अच्छे चरित्र वाला	सच्चरित्र
9	आज्ञा का पालन करने वाला	आज्ञाकारी
10	रोगी की चिकित्सा करने वाला	चिकित्सक
11	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
12	दूसरों पर उपकार करने वाला	उपकारी
13	जिसे कभी बुढ़ापा न आये	अजर
14	दया करने वाला	दयालु
15	जिसका आकार न हो	निराकार
16	जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
17	जहाँ पहुँचा न जा सके	अगम, अगम्य
18	जिसे बहुत कम ज्ञान हो, थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
19	मास में एक बार आने वाला	मासिक

20	जिसके कोई संतान न हो	निस्संतान
21	जो कभी न मरे	अमर
22	जिसका आचरण अच्छा न हो	दुराचारी
23	जिसका कोई मूल्य न हो	अमूल्य
24	जो वन में घूमता हो	वनचर
25	जो इस लोक से बाहर की बात हो	अलौकिक
26	जो इस लोक की बात हो	लौकिक
27	जिसके नीचे रेखा हो	रेखांकित
28	जिसका संबंध पश्चिम से हो	पाश्चात्य
29	जो स्थिर रहे	स्थावर
30	दुखांत नाटक	त्रासदी
31	जो क्षमा करने के योग्य हो	क्षम्य
32	हिंसा करने वाला	हिंसक
33	हित चाहने वाला	हितैषी
34	हाथ से लिखा हुआ	हस्तलिखित
35	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
36	जो स्वयं पैदा हुआ हो	स्वयंभू
37	जो शरण में आया हो	शरणागत
38	जिसका वर्णन न किया जा सके	वर्णनातीत
39	फल-फूल खाने वाला	शाकाहारी
40	जिसकी पत्नी भर गई हो	विधुर
41	जिसका पति भर गया हो	विधवा
42	सौतेली माँ	विमाता
43	व्याकरण जाननेवाला	वैयाकरण
44	रचना करने वाला	रचयिता
45	खून से रँगा हुआ	रक्तरंजित

46	अत्यंत सुन्दर स्त्री	रूपसी
47	कीर्तिमान पुरुष	यशस्वी
48	कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
49	मछली की तरह आँखों वाली	मीनाक्षी
50	मयूर की तरह आँखों वाली	मयूराक्षी
51	बच्चों के लिए काम की वस्तु	बालोपयोगी
52	जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो	बहुचर्चित
53	जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो	वंध्या (बाँझ)
54	फेन से भरा हुआ	फेनिल
55	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियंवदा
56	जिसकी उपमा न हो	निरुपम
57	जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो	नवजात
58	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
59	नगर में वास करने वाला	नागरिक
60	रात में घूमने वाला	निशाचर
61	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
62	मांस न खाने वाला	निरामिष
63	बिलकुल बरबाद हो गया हो	ध्वस्त
64	जिसकी धर्म में निष्ठा हो	धर्मनिष्ठ
65	देखने योग्य	दर्शनीय
66	बहुत तेज चलने वाला	द्रुतगामी
67	जो किसी पक्ष में न हो	तटस्थ
68	तत्त्व को जानने वाला	तत्त्वज्ञ
69	तप करने वाला	तपस्वी
70	जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
71	जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो	जितेंद्रिय

72	चिंता में डूबा हुआ	चिंतित
73	जो बहुत समय कर ठहरे	चिरस्थायी
74	जिसकी चार भुजाएँ हों	चतुर्भुज
75	हाथ में चक्र धारण करनेवाला	चक्रपाणि
76	जिससे घृणा की जाए	घृणित
77	जिसे गुप्त रखा जाए	गोपनीय
78	गणित का ज्ञाता	गणितज्ञ
79	आकाश को चूमने वाला	गगनचुंबी
80	जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खंडित
818	आकाश में उड़ने वाला	नभचर
82	तेज बुद्धिवाला	कुशाग्रबुद्धि
83	कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
84	जो उपकार मानता है	कृतज्ञ
85	किसी की हँसी उड़ाना	उपहास
86	ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
87	ऊपर लिखा गया	उपरिलिखित
88	जिस पर उपकार किया गया हो	उपकृत
89	इतिहास का ज्ञाता	अतिहासज्ञ
90	आलोचना करने वाला	आलोचक
91	ईश्वर में आस्था रखने वाला	आस्तिक
92	बिना वेतन का	अवैतनिक
93	जो कहा न जा सके	अकथनीय
94	जो गिना न जा सके	अगणित
95	जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो	अजातशत्रु
96	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
97	जो परिचित न हो	अपरिचित

3. विपरीतार्थक (विलोम शब्द)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	आविर्भाव	तिरोभाव	आकर्षण	विकर्षण
आमिष	निरामिष	अभिज्ञ	अनभिज्ञ	आजादी	गुलामी
अनुकूल	प्रतिकूल	आर्द्र	शुष्क	अनुराग	विराग
आहार	निराहार	अल्प	अधिक	अनिवार्य	वैकल्पिक
अमृत	विष	अगम	सुगम	अभिमान	नम्रता
आकाश	पाताल	आशा	निराशा	अर्थ	अनर्थ
अल्पायु	दीर्घायु	अनुग्रह	विग्रह	अपमान	सम्मान
आश्रित	निराश्रित	अंधकार	प्रकाश	अनुज	अग्रज
अरुचि	रुचि	आदि	अंत	आदान	प्रदान
आरंभ	अंत	आय	व्यय	अर्वाचीन	प्राचीन
अवनति	उन्नति	कटु	मधुर	अवनी	अंबर
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृतघ्न	आदर	अनादर
कड़वा	मीठा	आलोक	अंधकार	क्रुद्ध	शान्त
उदय	अस्त	क्रय	विक्रय	आयात	निर्यात
कर्म	निष्कर्म	अनुपस्थित	उपस्थित	खिलना	मुरझाना
आलस्य	स्फूर्ति	खुशी	दुख, गम	आर्य	अनार्य
गहरा	उथला	अतिवृष्टि	अनावृष्टि	गुरु	लघु
आदि	अनादि	जीवन	मरण	इच्छा	अनिच्छा
गुण	दोष	इष्ट	अनिष्ट	गरीब	अमीर
इच्छित	अनिच्छित	घर	बाहर	इहलोक	परलोक
चर	अचर	उपकार	अपकार	छूत	अछूत

उदार	अनुदार	जल	थल	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
जड़	चेतन	उधार	नकद	जीवन	मरण
उत्थान	पतन	जंगम	स्थावर	उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्तर	दक्षिण	जटिल	सरस	गुप्त	प्रकट
एक	अनेक	तुच्छ	महान	ऐसा	वैसा
दिन	रात	देव	दानव	दुराचारी	सदाचारी
मानवता	दानवता	धर्म	अधर्म	महात्मा	दुरात्मा
धीर	अधीर	मान	अपमान	धूप	छाँव
मित्र	शत्रु	नूतन	पुरातन	मधुर	कटु
नकली	असली	मिथ्या	सत्य	निर्माण	विनाश
मौखिक	लिखित	आस्तिक	नास्तिक	मोक्ष	बंधन
निकट	दूर	रक्षक	भक्षक	निंदा	स्तुति
पतिव्रता	कुलटा	राजा	रंक	पाप	पुण्य
राग	द्वेष	प्रलय	सृष्टि	रात्रि	दिवस
पवित्र	अपवित्र	लाभ	हानि	विधवा	सधवा
प्रेम	घृणा	विजय	पराजय	प्रश्न	उत्तर
पूर्ण	अपूर्ण	वसंत	पतझर	परतंत्र	स्वतंत्र
विरोध	समर्थन	बाढ़	सूखा	शूर	कायर
बंधन	मुक्ति	शयन	जागरण	बुराई	भलाई
शीत	उष्ण	भाव	अभाव	स्वर्ग	नरक
मंगल	अमंगल	सौभाग्य	दुर्भाग्य	स्वीकृत	अस्वीकृत
शुक्ल	कृष्ण	हित	अहित	साक्षर	निरक्षर
स्वदेश	विदेश	हर्ष	शोक	हिंसा	अहिंसा
स्वाधीन	पराधीन	क्षणिक	शाश्वत	साधु	असाधु
ज्ञान	अज्ञान	सुजन	दुर्जन	शुभ	अशुभ
सुपुत्र	कुपुत्र	सुमति	कुमति	सरस	नीरस

सच	झूठ	साकार	निराकार	श्रम	विश्राम
स्तुति	निंदा	विशुद्ध	दूषित	सजीव	निर्जीव
विषम	सम	सुर	असुर	विद्वान	मूर्ख

4. एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

1. अरु - जो हथियार हाथ से फेंककर चलाया जाए। जैसे-बाण।
शर - जो हथियार हाथ में पकड़े-पकड़े चलाया जाए। जैसे-कृपाण।
2. अलौकिक- जो इस जगत में कठिनाई से प्राप्त हो। लोकोत्तर।
अस्वाभाविक- जो मानव स्वभाव के विपरीत हो।
असाधारण- सांसारिक होकर भी अधिकता से न मिले। विशेष।
3. अमूल्य- जो चीज मूल्य देकर भी प्राप्त न हो सके।
बहुमूल्य- जिस चीज का बहुत मूल्य देना पड़ा।
4. आनंद- खुशी का स्थायी और गंभीर भाव।
आह्लाद- क्षणिक एवं तीव्र आनंद।
उल्लास- सुख-प्राप्ति की अल्पकालिक क्रिया, उमंग।
प्रसन्नता-साधारण आनंद का भाव।
5. ईर्ष्या- दूसरे की उन्नति को सहन न कर सकना।
डाह-ईर्ष्यायुक्त जलन।
द्वेष- शत्रुता का भाव।
स्पर्धा- दूसरों की उन्नति देखकर स्वयं उन्नति करने का प्रयास करना।
6. अपराध- सामाजिक एवं सरकारी कानून का उल्लंघन।
पाप- नैतिक एवं धार्मिक नियमों को तोड़ना।
7. अनुनय-किसी बात पर सहमत होने की प्रार्थना।
विनय- अनुशासन एवं शिष्टतापूर्ण निवेदन।
आवेदन-योग्यतानुसार किसी पद के लिए कथन द्वारा प्रस्तुत होना।
प्रार्थना- किसी कार्य-सिद्धि के लिए विनम्रतापूर्ण कथन।
8. आज्ञा-बड़ों का छोड़ों को कुछ करने के लिए आदेश।
अनुमति-प्रार्थना करने पर बड़ों द्वारा दी गई सहमति।
9. इच्छा- किसी वस्तु को चाहना।
उत्कंठा- प्रतीक्षायुक्त प्राप्ति की तीव्र इच्छा।
आशा-प्राप्ति की संभावना के साथ इच्छा का समन्वय।

स्पृहा-उत्कृष्ट इच्छा।

10. सुंदर- आकर्षक वस्तु।

चारु- पवित्र और सुंदर वस्तु।

रुचिर-सुरुचि जाग्रत करने वाली सुंदर वस्तु।

मनोहर- मन को लुभाने वाली वस्तु।

11. मित्र- समवयस्क, जो अपने प्रति प्यार रखता हो।

सखा-साथ रहने वाला समवयस्क।

सगा-आत्मीयता रखने वाला।

सुहृदय-सुंदर हृदय वाला, जिसका व्यवहार अच्छा हो।

12. अंतःकरण- मन, चित्त, बुद्धि, और अहंकार की समष्टि।

चित्त- स्मृति, विस्मृति, स्वप्न आदि गुणधारी चित्त।

मन- सुख-दुख की अनुभूति करने वाला।

13. महिला- कुलीन घराने की स्त्री।

पत्नी- अपनी विवाहित स्त्री।

स्त्री- नारी जाति की बोधक।

14. नमस्ते- समान अवस्था वालो को अभिवादन।

नमस्कार- समान अवस्था वालों को अभिवादन।

प्रणाम- अपने से बड़ों को अभिवादन।

अभिवादन- सम्माननीय व्यक्ति को हाथ जोड़ना।

15. अनुज- छोटा भाई।

अग्रज- बड़ा भाई।

भाई- छोटे-बड़े दोनों के लिए।

16. स्वागत- किसी के आगमन पर सम्मान।

अभिनंदन- अपने से बड़ों का विधिवत सम्मान।

17. अहंकार- अपने गुणों पर घमंड करना।

अभिमान- अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा समझना।

दंभ- अयोग्य होते हुए भी अभिमान करना।

18. मंत्रणा- गोपनीय रूप से परामर्श करना।

परामर्श- पूर्णतया किसी विषय पर विचार-विमर्श कर मत प्रकट करना।

5.समोच्चरित शब्द

1. अनल=आग

अनिल=हवा, वायु

2. उपकार=भलाई, भला करना
अपकार=बुराई, बुरा करना
3. अन्न=अनाज
अन्य=दूसरा
4. अणु=कण
अनु=पश्चात्
5. ओर=तरफ
और=तथा
6. असित=काला
अशित=खाया हुआ
7. अपेक्ष =तुलना में
उपेक्ष =निरादर, लापरवाही
8. कल=सुंदर, पुरजा
काल=समय
9. अंदर=भीतर
अंतर=भेद
10. अंक=गोद
अंग=देह का भाग
11. कुल=वंश
कूल=किनारा
12. अश्व =घोड़ा
अश्म=पत्थर
13. अलि=भ्रमर
आली=सखी
14. कृमि=कीट
कृषि=खेती
15. अपचार=अपराध उपचार=इलाज
16. अन्याय=गैर-इंसाफी
अन्यान्य =दूसरे-दूसरे
17. कृति=रचना
कृती=निपुण, परिश्रम
18. आमरण=मृत्युपर्यंत
आभरण=गहना

19. अवसान=अंत
आसान=सरल
20. कलि=कलियुग, झगडा
कली=अधखिला फूल
21. इतर=दूसरा
इत्र=सुगंधित द्र
22. क्रम=सिलसिला कर्म=काम
23. परुष=कठोर
पुरुष=आदमी
24. कुट=घर, किला
कूट=पर्वत
25. कुच=स्तन
कूच=प्रस्थान
26. प्रसाद=कृपा
प्रासादा=महल
27. कुजन=दुर्जन
कूजन=पक्षियों का कलरव
28. गत=बीता हुआ गति=चाल
29. पानी=जल
पाणि=हाथ
30. गुर=उपाय
गुरु=शिक्षक, भारी
31. ग्रह=सूर्य, चंद्र
गृह=घर
32. प्रकार=तरह
प्राकार=किला, घेरा
33. चरण=पैर
चारण=भाट
34. चिर=पुराना
चीर=वस्त्र
35. फन=साँप का फन
फ़न=कला
36. छत्र=छाया

क्ष =क्षत्रिय,शक्ति

37. ढीठ=दुष्ट,जिद्दी

डीठ=दृष्टि

38. बदन=देह

वदन=मुख

39. तरणि=सूर्य

तरणी=नौका

40. तरंग=लहर

तुरंग=घोडा

41. भवन=घर

भुवन=संसार

42. तप्त=गरम

तृप्त=संतुष्ट

43. दिन=दिवस

दीन=दरिद्र

44. भीति=भय

भित्ति=दीवार

45. दशा=हालत

दिशा=तरफ़

46. द्रव=तरल पदार

अथ द्रव =धन

47. भाषण=व्याख्या

भीषण=भयंकर

48. धरा=पृथ्वी

धारा=प्रवाह

49. नय=नीति

नव=नया

50. निर्वाण=मोक्ष

निर्माण=बनाना

51. निर्जर=देवता निर्झर=झरना

52. मत=राय

मति=बुद्धि

53. नेक=अच्छा

नेकु=तनिक

54. पथ=राह

पथ्य=रोगी का आहार

55. मद=मस्ती

मद =मदिरा

56. परिणाम=फल

परिमाण=वजन

57. मणि=रत्न

फणी=सर्प

58. मलिन=मैला

म्लान=मुरझाया हुआ

59. मातृ=माता

मात्र=केवल

60. रीति=तरीका

रीता=खाली

61. राज=शासन

राज=रहस्य

62. ललित=सुंदर

ललिता=गोपी

63. लक्ष्य=उद्देश्य

लक्ष =लाख

64. वक्ष =छाती

वृक्ष =पेड़

65. वसन=वस्त्र

व्यसन =नशा, आदत

66. वासना=कुत्सित

विचार बास=गंध

67. वस्तु=चीज

वास्तु=मकान

68. विजन=सुनसान

व्यज =पंखा

69. शंकर=शिव

संकर=मिश्रित

70. हिय=हृदय

हय=घोड़ा

71. शर=बाण

सर=तालाब

72. शम=संयम

सम=बराबर

73. चक्रवाक=चकवा

चक्रवात=बवंडर

74. शूर=वीर

सूर=अंधा

75. सुधि=स्मरण

सुधी=बुद्धिमान

76. अभेद=अंतर नहीं

अभेद =न टूटने योग्य

77. संघ=समुदाय

संग=साथ

78. सर्ग=अध्याय

स्वर्ग=एक लोक

79. प्रणय=प्रेम

परिणय=विवाह

80. समर्थ=सक्षम

सामर्थ्य=शक्ति

81. कटिबंध=कमरबंध

कटिबद्ध=तैयार

82. क्रांति=विद्रोह

क्लांति=थकावट

83. इंदिरा=लक्ष्मी

इंद्रा=इंद्राणी

6. अनेकार्थक शब्द

1. अक्षर= नष्ट न होने वाला, वर्ण, ईश्वर, शिव।

2. अर्थ= धन, ऐश्वर्य, प्रयोजन, हेतु।

3. आराम= बाग, विश्राम, रोग का दूर होना।

4. कर= हाथ, किरण, टैक्स, हाथी की सूँड।
5. काल= समय, मृत्यु, यमराज।
6. काम= कार्य, पेशा, धंधा, वासना, कामदेव।
7. गुण= कौशल, शील, रस्सी, स्वभाव, धनुष की डोरी।
8. घन= बादल, भारी, हथौड़ा, घना।
9. जलज= कमल, मोती, मछली, चंद्रमा, शंख।
10. तात= पिता, भाई, बड़ा, पूज्य, प्यारा, मित्र।
11. दल= समूह, सेना, पत्ता, हिस्सा, पक्ष, भाग, चिड़ी।
12. नग= पर्वत, वृक्ष, नगीना।
13. पयोधर= बादल, स्तन, पर्वत, गन्ना।
14. फल= लाभ, मेवा, नतीजा, भाले की नोक।
15. बाल= बालक, केश, बाला, दानेयुक्त डंठल।
16. मधु= शहद, मदिरा, चैत मास, एक दैत्य, वसंत।
17. राग= प्रेम, लाल रंग, संगीत की ध्वनि।
18. राशि= समूह, मेष, कर्क, वृश्चिक आदि राशियाँ।
19. लक्ष्य= निशान, उद्देश्य
20. वर्ण= अक्षर, रंग, ब्राह्मण आदि जातियाँ।
21. सारंग= मोर, सर्प, मेघ, हिरन, पपीहा, राजहंस, हाथी, कोयल, कामदेव, सिंह, धनुष भौरा, मधुमक्खी, कमल।
22. सर= अमृत, दूध, पानी, गंगा, मधु, पृथ्वी, तालाब।
23. क्षेत्र= देह, खेत, तीर्थ, सदाव्रत बाँटने का स्थान।
24. शिव= भाग्यशाली, महादेव, श्रृगाल, देव, मंगल।
25. हरि= हाथी, विष्णु, इंद्र, पहाड़, सिंह, घोड़ा, सर्प, वानर, मेढक, यमराज, ब्रह्मा, शिव, कोयल, किरण, हंस।

7. पशु-पक्षियों की बोलियाँ

पशु	बोली	पशु	बोली	पशु	बोली
ऊँट	बलबलाना	कोयल	कूकना	गाय	रँभाना
चिड़िया	चहचहाना	भैंस	डकराना (रँभाना)	बकरी	मिमियाना
मोर	कुहकना	घोड़ा	हिनहिनाना	तोता	टैं-टैं करना
हाथी	चिघाड़ना	कौआ	काँव-काँव करना	साँप	फुफकारना

शेर	दहाड़ना	सारस	क्रें-क्रें करना		
टिटहरी	टीं-टीं करना	कुत्ता	भोंकना	मक्खी	भिनभिनाना

8. कुछ जड़ पदार्थों की विशेष ध्वनियाँ या क्रियाएँ

जिहवा	लपलपाना	दाँत	किटकिटाना
हृदय	धड़कना	पैर	पटकना
अश्रु	छलछलाना	घड़ी	टिक-टिक करना
पंख	फड़फड़ाना	तारे	जगमगाना
नौका	डगमगाना	मेघ	गरजना

9. कुछ सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	लिखायी	लिखाई	सप्ताहिक	साप्ताहिक	अलोकिक	अलौकिक
संसारिक	सांसारिक	क्यूँ	क्यों	आधीन	अधीन	हस्ताक्षेप	हस्तक्षे
व्योहार	व्यवहार	बरात	बारात	उपन्यासिक	औपन्यासिक	क्षत्रीय	क्षत्रिय
दुनियां	दुनिया	तिथी	तिथि	कालीदास	कालिदास	पूरती	पूर्ति
अतिथी	अतिथि	नीती	नीति	गृहणी	गृहिणी	परिस्थित	परिस्थिति
आर्शिवाद	आशीर्वाद	निरिक्षण	निरीक्षण	बिमारी	बीमारी	पत्नि	पत्नी
शताब्दि	शताब्दी	लड़ायी	लड़ाई	स्थाई	स्थायी	श्रीमति	श्रीमती
सामिग्रि	सामग्री	वापिस	वापस	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	उत्थान	उत्थान
दुसरा	दूसरा	साधू	साधु	रेणू	रेणु	नुपुर	नूपुर
अनुदित	अनूदित	जादु	जादू	बृज	ब्रज	प्रथक	पृथक
इतिहासिक	ऐतिहासिक	दाइत्व	दायित्व	सेनिक	सैनिक	सैना	सेना
घबड़ाना	घबराना	श्राप	शाप	बनस्पति	वनस्पति	बन	वन
विना	बिना	बसंत	वसंत	अमावश्या	अमावस्या	प्रशाद	प्रसाद

हंसिया	हँसिया	गंवार	गँवार	असोक	अशोक	निस्वार्थ	निःस्वार्थ
दुस्कर	दुष्कर	मुल्यवान	मूल्यवान	सिरीमान	श्रीमान	महाअन	महान
नवम्	नवम	क्षात्र	छात्र	छमा	क्षमा	आर्दश	आदर्श
षष्टम्	षष्ठ	प्रंतु	परंतु	प्रीक्षा	परीक्षा	मरयादा	मर्यादा
दुदर्शा	दुर्दशा	कवित्री	कवयित्री	प्रमात्म	परमात्मा	घनिष्ट	घनिष्ठ
राजभिषेक	राज्याभिषेक	पियास	प्यास	वितीत	व्यतीत	कृप्या	कृपा
व्यक्तिक	वैयक्तिक	मांसिक	मानसिक	समवाद	संवाद	संपति	संपत्ति
विषेश	विशेष	शाशन	शासन	दुःख	दुख	मूलतयः	मूलतः
पिओ	पियो	हुये	हुए	लीये	लिए	सहास	साहस
रामायन	रामायण	चरन	चरण	रनभूमि	रणभूमि	रसायण	रसायन
प्राण	प्राण	मरन	मरण	कल्याण	कल्याण	पडता	पड़ता
ढेर	ढेर	झाड़	झाड़	मेंढक	मेढक	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
षष्ठी	षष्ठी	निष्ठा	निष्ठा	सृष्टि	सृष्टि	इष्ठ	इष्ठ
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	पांडे	पांडेय	स्वतंत्रा	स्वतंत्रत	उपलक्ष	उपलक्ष्य
महत्व	महत्त्व	आल्हाद	आह्लाद	उज्वल	उज्ज्वल	व्यस्क	वयस्क